वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

दिसम्बर – 2016

* हित अनुराग का प्रथम विकास
* परम पूजनीय भगवान का अनोखा हित अनुरागी रूप
* हित अनुराग के विकास का अगला कदम
* मेरे अद्वितीय त्याग क्यो?

परम पूजनीय भगवान का अनोखा हित अनुराग

परम पूजनीय भगवान देवात्मा को मनुष्य मात्र से पूर्णता भिन्न जिन चार प्रकार की देव शक्तियों की जो अनोखी विरासत मिली और उसका कैसे विकास हुआ जिससे उनकी मूल रूप से सारे मनुष्य मात्र से भिन्न सोच और क्रियाएं हुई, यह कथा अविश्वसीय और अनोखी है। हम परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शरण को प्राप्त करके तोते की तरह रट लेते हैं कि देवात्मा में देव शक्तियां थी, जो मनुष्यों में नहीं हैं लेकिन न उनका अध्ययन करते हैं ओर न उनकी गहराई में जाते हैं कि आखिर वह अनोखी देव शक्तियां हैं क्या? यह पता है कि वह चार प्रकार की हैं, परन्तु देवात्मा में उन चार प्रकार की देवशक्तियों ने विकसित होकर किस प्रकार सारे मनुष्य मात्र के लिए उन्हें पूज्य बना दिया, यह मुंह से कहकर भी हम उनको समझने और दिल की गहराई में उतारने की न कोई इच्छा रखते हैं और न कोई यत्न। उन देव शक्तियों ने उनको कैसा सुन्दर रूप प्रदान कर दिया, यदि हम उनको दिल की गहराई से समझें तो उन पर मोहित हो जाएं और हमारे जीवन की गति बदल जाए। हम सब ही इस कृपापात्र अवस्था में हैं परन्तु जिन्होंने थोड़ा बहुत भी उनके रूप की गहराई को समझा है, वह अपने तन, मन, धन से उन पर कुर्बान हो गए हैं। उन देव शक्तियों को मेरी तुच्छ योग्यता से पूरे तौर पर explain करना भी कठिन हैं, परन्तु अपनी मान्सिक योग्यता से कुछ समझ है, वह मोटे तौर पर इस प्रकार हैं:

(1) हर प्रकार की सचाई के लिए पूर्णत: अनुराग, सत्य का ही समर्थन, सत्य को खोजना ओर उसके मार्ग में जो कठिनाईयां आएं उनको अपनी जान पर खेलकर भी सहना, और इसलिए इसी अनुराग से जो आत्मा के सम्बन्ध में विज्ञान पर आधारित जो सत्य और तत्व खोजे, वह आज तक किसी ने नहीं खोजे। इस खोज में अपने पुराने विश्वासों को कैसे त्यागा और कितनी विरोधताएं सही, वह "मुझ में देव जीवन के विकास खण्ड-1 में वर्णित हैं।

(2) अनोखा हित अनुराग - अपने हित और चारों जगतों के हित अनुराग ने उन्हें एक अनोखा रूप प्रदान कर दिया और इसके लिए उन्होंने क्या क्या त्याग किए, उनके आद्वितीय त्याग के 7 भागों में पढ़कर दिल दहल जाता है।

(3) हर प्रकार के अहित के लिए, पूर्ण वैराग्य

(4) हर प्रकार की मिथ्या और झूठ के लिए पूर्ण वैराग्य वा घृणा। और इसके लिए मिथ्या विश्वासियों के द्वारा असह्य उत्पीड़न।

इस अंक में हम उनके हित अनुराग को बहुत ही सिंपल ढंग से छोटी छोटी घटनाओं द्वारा वर्णन करेंगे। परम पूजनीय भगवान द्वारा लिखित देव वाणी आप ध्यान से पढ़ें तो बड़ी कृपा होगी।

सुरजीत बराड़

धर्म जीवन

खण्ड 29 अंक 12
दिसम्बर 2016
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

हित अनुराग का प्रथम विकास

परम पूजनीय भगवान देवात्मा में बाल्य काल में पहले पहल हित विषयक आसाधारण और अति वचित्र अनुराग का विकास आरम्भ हुआ और उसकी प्रबल प्रेरणा के अनुसार अपनी प्रत्येक क्रिया के लिए जो उनके अपने वा किसी और के लिए उन्हें हितकर प्रतीत होती थी उसका साथ देने और जो उन्हें अपने वा किसी और के लिए अहितकर प्रतीत होती थी उसका साथ न देने के लिए अपने आपको मजबूर अनुभव करने लगे। इस हित अनुराग के विकास के सम्बन्ध में उनकी 16 वर्ष की उमर तक ही ऐसी बहुत सी घटनाएं मिलती हैं जो उस उमर के बच्चों से पूर्णत: भिन्न और निराली हैं। ज्यों ज्यों हित अनुराग का विकास होता गया, तो उनका देव जीवन चारों जगतों के हित के लिए एक आदर्श बन गया, जिसकी नकल करना भी हम मनुष्यों के लिए असम्भव है।

एक 12 वर्ष का बच्चा है, जो बहुत सम्पन्न परिवार से सम्बन्ध रखता है, उस समय की प्रथा के अनुसार गौने के अवसर पर जैसे बड़े बड़े घरों की प्रथा थी, शादी में लड़कों को भी जेवर पहनाए जाते थे, परन्तु उन्होंने एक पुस्तक में पढ़ लिया कि बच्चों को जेवर नहीं पहनना चाहिए क्योंकि जेवरों के लालच में चोर, ठग उन्हें हानि पहुंचा सकते हैं, तो बहुत ज़ोर लगाने पर भी जेवर नहीं पहनें।

पुस्तक में पढ़ा कि बच्चों के लिए पढ़ने के साथ खेलना आवश्यक है तो पिता नहीं चाहते थे कि वह खेलने में समय बर्बाद करें जबकि कलास में फस्ट आते थे, तो उन्होंने अपने श्रद्धेय पिता को वह पुस्तक जिसमें लिखा था कि पढ़ने के साथ बच्चों को खेलना आवश्यक है, पढ़ा दी, और खेलना जारी रखा। अपने हित को लेकर खेलना आवश्यक समझा न कि आम बच्चों की तरह पढ़ाई छोड़कर समय बर्बाद करने के लिए खेलते थे।

विद्या अनुराग इतना प्रबल विकसित हो गया कि गांव में आठवीं तक स्कूल था, तो माता पिता को मजबूर किया कि वह उन्हें पढ़ने के लिए बाहर भेजें, वह दूर भेजने के लिए नहीं मानते थे। सारी formalities उस छोटी सी उमर में पूरी की और पिता को मजबूर कर दिया कि वह आज्ञा दें और उनकी आज्ञा लेकर रुड़की इंजनियरिंग कालिज में दाख़िल हो गए।

उस काल में स्त्रियों को पढ़ाना बहुत बुरा समझा जाता था। परन्तु यह छोटा सा बालक इसको अन्याय समझता था उन्होंने अपनी बहुत विरोधता के बावजूद अपनी भावजा और भतीजी को ऊपर छत पर जाकर पढ़ाना शुरू किया। पूजनीय भगवान फरमाते हैं

कि "यद्यपि मेरा यह काम बहुत बुरा समझा जाता था, तथापि मैंने औरों के डर से उसे किसी तरह परित्याग नहीं किया।"

कर्तव्य पालन विषयक प्रबल भाव की उत्पत्ति – पूजनीय भगवान फरमाते है "कि बचपन से ही जब उन्हें किसी उचित प्रतिज्ञा या किसी एक वा दूसरी बात को पूरा करना होता और यह सोचकर कि यदि मैं इसे पूरा नहीं करूंगा तो मैं उसके लिए **हानिकारक बनूंगा**, तब मैं उसको पूरा करने के लिए अपने हृदय के **हित अनुराग** और **अहित विषयक वैराग्य भाव** के कारण इतनी प्रबन **प्रेरणा वा अकांक्षा** अनुभव करता कि उसके विरूद्ध कभी न जा सकता, यहां तक कि उसके विरूद्ध चिन्ता भी न कर सकता, चाहे वह कैसा ही कष्टकर भी हो,"

कृतज्ञता – मूलक पर सेवा भाव की उत्पत्ति

परम पूजनीय भगवान फरमाते हैं कि "हित अनुरागी होने के कारण, मेरे लिए यह एक स्वभाविक बात थी, कि मेरा जिस किसी के द्वारा कुछ भी हित हो, उसके इस **हित** के **सौन्दर्य्य** को उपलब्ध करूं और इस उपलब्धि से उसके सम्बन्ध में अपने आपको **उपकृत वा ऋणी वा कृतज्ञ अनुभव करूं** और अपने इस भाव से परिचालित होकर ऐसे किसी **ऋण के परिशाध** के लिए मैं उसके सम्बन्ध में, जिस जिस प्रकार से जहां तक हो सके उसके लिए सेवाकारी बनकर अपने इस भाव की तृप्ति करूं। मैं बाल्यकाल से ही अपने माता पिता की इच्छा के अनुसार उनकी और घर सम्बन्धी अन्य कई प्रकार की सेवा किया करता था। इसी भाव से मैं अपने शिक्षकों की और अपने श्रद्धेय पिता के पांव दबाने की सेवा किया करता था।"

अभाव निवारण मूलक सेवा भाव की उत्पत्ति

बचपन से गुरू महाराज, जिस चीज़ को अपने लिए हितकर समझते, उस द्वारा औरों का हित करने का प्रबल भाव रखते थे। बैठूर के मेले से एक पुस्तक लेकर आए, जिसमें भरत मिलाप की कथा थी, उसको पाठ करते हुए कई बार फूट फूट कर रो पड़ते। एक ब्राह्मण के घर जाकर, वह कथा सुनाते जिसमें घर के कई लोग शामिल होते। इस प्रकार और कई अन्य घटनाएं हैं, भगवान फरमाते हैं, "जो कुछ मैं **अपने लिए हितकर** अनुभव करता, उसका औरों में प्रचार करके, उनका हित करने के लिए अपने हृदय में **प्रेरणा** अनुभव करता।"

औरों के उच्च गुणों और हितकर गुणों के प्रति आकर्षण भाव की उत्पत्ति

पूजनीय भगवान उस समय के संस्कारों के अनुसार यह जानकर कि अमुक देवते आश्रित भक्तों की सदा रक्षा और सहायता करते हैं, उनके इस गुण और महानता के प्रति श्रद्धा और आकर्षण अनुभव करते। इसी प्रकार राम की कथा सुनकर हनुमान जी के गुणों के प्रति बहुत श्रद्धा रखते थे। उनकी स्वामी भक्ति को नतमस्तक थे। हनुमान जी का श्रद्धा पूर्वक ब्रत रखते।

भगवान फरमाते हैं– "इस कुल विश्वास और पूजा के साधन में जो बात विशेष रूप से समझने और ध्यान देने के योग्य है, वह यह कि मेरे हृदय में बाल्यकाल से ही नाना **उच्च भावों के सौंदर्य्य के देखने और उनके प्रति आकृष्ट होने का महा हितकर भाव वर्तमान था,** और इस पृथ्वी से अतीत कई ऐसे अस्तित्वों पर भी विश्वास था कि जिनसे मैं उन दिनों अपने शुभ के लिए सहाय चाहा करता था।

ब्रत पालन विषयक प्रबल भाव की उत्पत्ति

उस समय के संस्कारों के अनुसार हनुमान जी के सम्बन्ध में ब्रत रखने के भिन्न, पूजनीय भगवान जन्म अष्टमी का भी ब्रत रखते थे। उस दिन प्रात: काल से रात बारह बजे तक भूखे प्यासे रहते और एक बार गला बहुत सूखने पर पिता ने कुल्लियां करवा दी तब भी उन्होंने एक बूंद पानी भी अन्दर नहीं जाने दिया ताकि ब्रत भंग न हो जाए। आत्मा के हित को समझ कर वह ऐसा करते और जिस निष्टा से ब्रत का पालन करते यह हित अनुराग का उदाहरण है।

पूर्णत: विषयक शुभ भाव की उत्पत्ति

परम पूजनीय भगवान देवात्मा फरमाते हैं' – "हित अनुराग के विकास के साथ, मुझमें पूर्णत: विषयक भाव का विकास पाना भी अवश्यम्भावी था, क्योंकि किसी हितकर काम को यथा सम्भव पूरा न करके और बीच में छोड़ देने से, उसके पूर्ण होने से जितने हित की उत्पत्ति होती, उसका खो देना मुझे बहुत अप्रिय बोध होता था। इसलिए किसी हितकर काम को आरम्भ करके उसे, जहां तक सम्भव हो, अधूरा न छोड़ना और पूरा करके ही छोड़ना, चाहे उसके पूरा करने में किसी दिक्कत वा कठिनता आदि का सामना करना पड़े, और उसे पूरा करके और उसमें सफल काम होकर अपने इस भाव की जय करना, मुझे बहुत प्रिय था और उसके विपरीत विफल काम होना मुझे बहुत अप्रिय था।"

हितकर मेल विषयक प्रबल भाव की उत्पत्ति

भगवान फरमाते है: – "मुझमें जितने प्रकार के हित अनुराग विषयक उच्च भाव विकसित हुए थे, वह सभी अपनी तृप्ति चाहते थे, उनमें से किसी के सम्बन्ध में किसी बाधा वा विरोधता के उत्पन्न होने पर, मुझे बहुत आघात पहुंचता था और उससे मेरे हृदय में बहुत गहरी अशान्ति उत्पन्न हो जाती थी, और मैं बहुत कष्ट पाता था। इधर मैं इस कष्ट से स्वभावत: बचना चाहता था, उधर अपने **इन भावों के विरूद्ध और उन्हें मारकर** किसी के साथ **मेल स्थापन नहीं कर सकता था।** इसी लिए बाल्यकाल से ही मेरा जीवन बहुत संग्राम का जीवन बन गया। मैं उस समय आप खुद नहीं जानता था, कि जीवन विषयक संग्राम क्या होता है। परन्तु मेरे हृदय में जिन उच्च गति दायक महान भावों का विकास हो चुका था, वह मुझे **इस संग्राम की हालत में रखते थे।**

"मैं अपने प्रत्येक संबन्धी और प्रत्येक मनुष्य के साथ अपने **उच्च भावों** को स्थिर रखकर **मेल और शान्ति** की हालत में रहने की **अत्यन्त गहरी अकांक्षा रखता था**, परन्तु एक ओर उन उच्च भावों से शून्य होने और दूसरी ओर उनके विरोधी भाव वर्तमान रखने के कारण, जैसे और लोग मुझसे मेरे **उच्च भावों के आधार पर मेल कर नहीं सकते थे**, वैसे ही मैं भी उनमें से किसी के किसी नीच गति दायक भाव के आधार पर मेल नहीं कर सकता था। इसलिए नेचर की इस वचित्र गति के अनुसार उस समय से लेकर इस प्रकार का जो संग्राम मेरे जीवन में आरम्भ हुआ था, वह उसके बाद भी केवल यहीं नहीं कि ज़ारी रहा किन्तु नाना समयों में उसने जिस जिस प्रकार का महा भयंकर रूप ग्रहण किया, उसका वर्णन नहीं हो सकता।

परम पूजनीय भगवान की यह बाल – लीला थी, जिसमें वह अपने हित और दूसरों का हित करने के लिए व्याकुल रहते थे। मिथ्या विश्वासी गुरूओं, अवतारों में कहीं ऐसे देव भावों का प्रकाश न कभी पढ़ने, देखने को मिला है और न मिल सकता है। हमारे अन्ध विश्वासी भक्त तो चोरी माखन खाने की खूब नाच नाच कर महिमा गाते हैं। परन्तु देवात्मा जिन

अद्भुत देव शक्तियों को लेकर प्रगट हुए थे, उन्होंने जन्म के साथ ही कोई चमत्कार नहीं दिखाए, उनकी देव शक्तियों ने धीरे धीरे विकास पाया। बीज रूप में देव शक्तियों को प्राप्त होकर, अनुकूल हालातों में उनका जो विकास हुआ और विकसित होकर वह शरोमणी उपास्य देव बन गए, उनकी यह विकास की कथा जहां बहुत रोचक है, वहां अधिकारी जनों को श्रद्धा के साथ नतमस्तक होने के लिए मजबूर करती है।

उपरोक्त उच्च भावों के साथ उनमें बाल्यकाल में ही और उच्च वा हितकर भावों का भी विकास हुआ, जैसे :-

बड़ों के सम्बन्ध में श्रद्धा और सन्मान भाव

परम पूजनीय भगवान देवात्मा अपने माता पिता, अपने वंशीय जनों अपने शिक्षकों के चरण स्पर्श करके प्रणाम करते थे। और माननिय जनों को भी हाथ जोड़कर प्रणाम करते थे। भगवान फरमाते हैं "उन सबके सामने खड़े होने, बैठने और उनके साथ बात चीत करने में भी मैं इसी भाव से परिचालित होता था। मैं किसी बड़े की किसी बात को अपनी समझ से विपरीत पाकर, उसकी पीठ के पीछे परन्तु किसी और के सम्मुख उनकी खिल्ली नहीं उड़ाता था। इसलिए जिस किसी के सम्बन्ध में जितना कुछ श्रद्धा और सन्मान का भाव था, वह पवित्र था।"

औरों के कष्ट वा दुख के सम्बन्ध में दया भाव

पूजनीय भगवान के वंशीय जन कोई मांसाहारी नही था, तो उनमें हिंसा का भाव जन्म काल से ही उत्पन्न नहीं हुआ था। पूजनीय भगवान फरमाते हैं "मुझे किसी जीव को भी अपनी प्रसन्नता के लिए छेड़ना वा सताना, दिक्क करना या मारना प्रिय न था, किन्तु इसके विपनीत यदि कोई जन किसी ओर जन वा जीव को कष्ट देता हो, अथवा कोई जन वा जीव अपने शारीरिक रोग वा किसी अन्य पीड़ा के कारण उसका किसी बेचैनी वा किसी आर्तशब्द के द्वारा प्रकाश कर रहा हो, तो उसे देखकर वा उसका ऐसा हाल सुनकर मेरे हृदय में आघात लगता था, मेरे हृदय में ऐसी कामना उठती थी, कि उसका यह कष्ट दूर हो जावे"

बचपन में पूजनीय भगवान जंगल से एक गलहरी का बच्चा ले आए। उसे देखकर उनके पिता ने फरमाया कि इसकी मां इसको ढूंडती होगी और व्याकुल होगी, इसे उसी वृक्ष पर छोड़कर आओ। शाम का समय था, पूजनीय भगवान नन्हें बालक उसी समय जंगल की और दौड़े वह जगह लगभग एक मील दूर थी। वह उसी समय वहां गए, उस वृक्ष पर जब बच्चे को छोड़ा, तो वह खुशी की आवाजें निकालता हुआ वृक्ष पर चढ़ गया। उनको खुश देखकर पूजनीय भगवान ने हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त की। साधारण बच्चा जंगल में कहीं भी छोड़कर आ जाता और कहता कि मैं छोड़ आया हूं। पूजनीय भगवान का देव हृदय ऐसा कर ही नहीं सकता था। बच्चे की मां जो कष्ट में थी, जब वह भी खुशी से आवाजें निकालने लगी। इस दृश्य ने और उनके सुखप्रद मिलन से पूजनीय भगवान के दया भाव विषयक हित भाव इस तृप्ति से बहुत सन्तुष्ट हुआ। पूजनीय भगवान फरमाते हैं, "हित अनुराग की उन्नति के साथ साथ मेरे इस भाव को और भी पोषकता मिलती रहीं।

परिष्कारता का भाव

बचपन से ही परम पूजनीय भगवान देवात्मा के भीतर परिष्कारता अर्थात सफाई का बोध और प्यार था। अपने आपको साफ सुथरा रखना, अपने वस्त्रों वा

पुस्तकों को साफ रखना उनके जीवन का अभिन्न अंग था। मैले और फूहड़पन से पूर्ण घृणा थी।

वस्तुओं की उचित रक्षा का भाव

वह हमेशा अपनी पुस्तकों को साफ तो रखते ही थे। पूजनीय भगवान फरमाते है कि "जहां तक सम्भव था, सब प्रकार के दाग धब्बों से सुरक्षित ही नहीं रखता था, उनके किसी सफे को मोड़ा, तोड़ा या फाड़ा जाना भी पसन्द नहीं करता था, और इसीलिए उन्हें बहुत सम्भाल कर रखता था और उनकी हानि से कष्ट बोध करता था। इसी भाव के अनुसार मैं प्रयोग में आने वाली और चीज़ों को भी बहुत सम्भाल कर रखता था।"

फूलो के प्रति आकर्षण भाव

फूलों के प्रति भगवान देवात्मा का बचपन से ही बहुत आकर्षण था, यह ज्यों ज्यों बड़े होते गए, यह इतना बढ़ गया था कि वह जहां जहां भी रहे, वह फूलों से अपने निवास स्थान को गुलज़ार बना लेते थे। स्वंय बहुत व्यस्त होकर भी पौधों की देखभाल करनी, स्वंय गोडी देनी उनकी दिनचर्य्या का एक भाग था। इसीलिए सोलन पर्वत की ऊंचाई पर भी उनकी निगरानी में इतने फूल थे कि उसको फूलों वाली कोठी कहा जाता था।

कई प्रकार के सुन्दर पक्षियों आदि के प्रति आकर्षण भाव

पूजनीय भगवान फरमाते हैं:- "मुझे कई प्रकार के रंगीले पक्षी यथा कबूतर, बुलबुल, तोते और लाल आदि कुत्तों वा बिल्ली आदि के छोटे छोटे बच्चे बहुत आकृष्ट करते थे। यहां तक कि मैं यथा सम्भव उन्हें अपने पास रखने और उन्हें पालने के लिए बहुत प्रबल प्रेरणा अनुभव करता था। इसी प्रबल भाव से परिचालित होकर और अपने पिता की अनुमति लेकर, मैंने एक बार एक सफेद रंग की बिल्ली का बच्चा पाला, वह बच्चा नारी था और चम्बेली की तरह सफेद था, उसका नाम भी चमेली रखा, उसके गले में घुघरू बांधा, मैं उसे दिन में कई बार दूध पिलाता। चम्बेली हमारे घर में कुदक्कड़े लगाती और मैं बहुत खुश होता। एक बार तोते का बच्चा भी पाला, दो प्रकार के और बच्चे भी पाले।

आत्म सहाय का भावः

भगवान फरमाते हैं "हित अनुरागी होकर मैं यह कभी पसन्द नहीं करता था, कि मैं अपना जो काम आप करने के योग्य हूं, उसके लिए अकारण किसी और की सहाय का अकांक्षी वा प्रार्थी बनूं, और किसी आलस्य वा आराम के वशीभूत होकर वा कष्ट के भय से उसे आप न करूं, और किसी अनुचित हानि को होने दूं। मैं हित अनुरागी होकर, जान बूझकर, किसी अनुचित हानि का साथ नहीं दे सकता था। इसीलिए आत्म सहाय का भाव मुझ में बाल्य काल से ही विकसित हो गया और मैं इस भाव के कारण आवश्यक होने पर प्रत्येक ऐसे भले काम के करने के लिए भी तैयार होता गया, कि जिन्हें कितने ही लोग केवल मिथ्या संस्कार वा रिवाज आदि के वशीभूत होकर नहीं करते वा नहीं करना चाहते, वा उनके करने में अपनी हेठी वा बेइज्ज़ती समझते हैं।

आत्म सनमान का भाव

पूज़नीय भगवान फरमाते हैं:- "किसी ऐसे जन के पास निज के तौर पर मिलने के लिए जाना वा किसी जन के घर में ठहरना जो तुमसे मिलना वा तुम्हें अपने घर में ठहराना पसन्द न करता हो, और तुम पर उसका यह भाव किसी प्रकार से प्रगट से चुका हो, अथवा किसी से कोई ऐसी चीज़ मांगना, कि जिसे

तुम खुद अपने खर्च या यत्न से आसानी से अपने पास रख सकते हो, अथवा किसी छोटे के सम्बन्ध में कोई ऐसी क्रिया करना, कि जो बड़े की मर्य्यादा के विरुद्ध हो, अथवा किसी से द्वारा अनुचित आक्रमण करने पर, बिना उचित कारण के, चुप रहना और अपने उचित बचाव के लिए कुछ न करना, इत्यादि विविध प्रकार की क्रियाएं आत्म सम्मान विषयक भाव के विरुद्ध हैं, और जिस में यह भाव भली भान्त विकसित हुआ हो, वह इस प्रकार की कोई क्रिया नहीं कर सकता। मुझमें इस भाव का विकास बाल्पकाल से आरम्भ हो गया था।" पूजनीय भगवान ने यह भी फरमाया है कि हो सकता है इन उच्च भावों क भिन्न, और भी कोई हित सम्बन्धी भाव विकसित हुए हों, परन्तु यह पुस्तक लिखने तक उन्हें स्मरण नहीं था।

हित अनुराग के विरोधी मेरा विविध नीच भावों से पूर्णतः रहित होना

भगवान ने फरमाया हैं, "मेरे आत्मा में देव जीवन विषयक जिन आसाधारण देव अनुरागों के विकास ओर उनके **विरोधी** जिन आत्म विनाशक महा नीच भावों से **पूर्ण रूप से रहित रहने की आवश्यकता थी,** और जिन नीच भावों से मैं अपने जन्म काल से ही पूर्णतः रहित रहा, वह यह थे: -

1) **ईर्षा भाव**

भगवान फरमाते हैं, "अपनी अपेक्षा बढ़कर अथवा यूं भी किसी विषय में किसी जन का गौरव वा उसकी उन्नति, समृद्धि वा अच्छी अवस्था को देखकर या सुनकर जल उठना, कुढ़ने लगना वा दुखी होना और उसके प्रति घृणा अनुभव करना या इससे भी बढ़कर उसे किसी प्रकार की हानि पहुंचाने के लिए अकांक्षा वा यत्न करना, **ईर्षाभाव** कहलाता है। इस आत्म - विनाशक महा नीच भाव का बीज तक मुझ में जन्मकाल से ही वर्तमान नहीं था।

2) **द्वेष भावः –** किसी जन से कोई उचित वा अनुचित कष्ट वा दुख वा हानि पाकर उससे अपनी किसी कामना की तृप्ति न पाकर उसे **घृणा** करना वा उससे फट जाना और उसके प्रति प्रतिशोध भाव से परिचालित होकर उसे हानि पहुंचाने की चिन्ता वा यत्न करना, वा उसकी किसी और के द्वारा अनुचित हानि की ख़बर पाकर हर्ष वा तृप्ति लाभ करना, वा किसी के अनुचित आक्रमण करने पर अपनी उचित रक्षा के लिए यथावश्यक कोई नैतिक वा वैद्ध उपाय अवलम्बन करने के भिन्न **बदला लेने की नियत से** उसे किसी प्रकार की हानि पहुँचाने के लिए यत्न करना, **द्वेष भाव कहलाता है**। यह आत्म - जीवन - विनाशक महा नीच भाव मुझ में जन्मकाल से ही उत्पन्न नहीं हुआ था, क्योंकि उसका उत्पन्न होना मेरे जन्मजात स्वभाव के ही विरुद्ध था। इसीलिए अपने विरोधियों की ओर से नाना अनुचित आघातों और कष्टों और विविध प्रकार की अन्य नाना हानियों को छोड़कर मेरे जब किसी उपकृत जन ने भी इस महा नीच और आत्म - जीवन - विनाशक द्वेष भाव से उतेजित होकर मेरे प्रति घृणा की है, **अथवा** इससे भी बढ़कर कृतघ्न बनकर मुझे विविध प्रकार से हानि पहुँचाने का प्रयत्न किया है, तब भी मैंने केवल इन **महा – हानिकारक नीच गतियों को ही घृणित** रूप में देखा है, किन्तु उसके प्रति घृणा नहीं की। हां, इसके विपरीत जब तक और जहां तक मुझे मुख्यता उसके आत्मिक और गौणता किसी अन्य कल्याण करने का अवसर मिला है, तब तक और वहां तक मैंने अपने हित भाव से परिचालित होकर उसका केवल हित ही किया है।

3) हिंसा भाव

किसी मनुष्य वा पशु को किसी प्रकार का कोई अनुचित कष्ट पहुंचाकर वा वध करके अथवा किसी जीवित वृक्ष वा पौदे वा किसी अन्य अजीवित वस्तु को उचित कारण के बिना, किसी प्रकार की हानि पहुंचा कर वा बिगाड़ कर वा तोड़ फोड़ कर हर्ष लाभ करने का भाव हिंसा भाव कहलाता है। यह महा नीच और आत्म विनाशक भाव भी मुझ में बाल्यकाल से ही कभी उत्पन्न नहीं हुआ, और न यह मेरे हित अनुराग की उत्पत्ति और उन्नति के कारण मुझ में उत्पन्न हो हि सकता था।

4) घमंड भाव

"मैं" वा "अंह" विषयक सब प्रकार के अनुचित पक्षपात को मिथ्या अभिमान वा घमंड कहते हैं। इस घमंड की उत्पत्ति के लिए मेरी हृदय भूमि जन्म काल से हि अनुकूल न थी। मैं बाल्यकाल से हि जब अपने हित अनुराग के विकास के कारण किसी बात को हितकर समझ कर उस के विरुद्ध कभी किसी के कुछ कहने वा किसी के डर वा किसी की ओर से किसी लालच की परवाह न करता था, तब यद्यपि कई लोग मेरी इस अनोखी चाल को अपने विरुद्ध देखकर, अपनी नादानी से मुझे बहुत हठी, घमंडी वा मग़रूर आदि कहकर मुझ पर अन्याय करते, तथापि मैं अपनी आत्मिक उन्नति के साथ साथ न केवल मनुष्य जगत् के नाना जनों के सदगुणों को अधिक से अधिक देखने के योग्य होते जाने, किन्तु उनके भिन्न विश्व के अन्य विभागों के साथ अपने अस्तित्व के अति घनिष्ट संबंध को धीरे धीरे अधिक उपलब्ध करने के योग्य होते जाने और इस सत्य के दिनों दिन अधिक से अधिक उपलब्ध करने के योग्य बनते जाने से, कि मैं अपने आप कुछ भी नहीं और कहीं भी नहीं, और मेरा समस्त अस्तित्व इस विश्व के नाना विभागों के नाना अस्तित्वों और उनकी सहाय पर हि निर्भर करता है, दिनों दिन अधिक से अधिक सच्चा श्रद्धावान और दीन बनता गया। और मैं जिन देव शक्तियों को बीज रूप में लेकर जन्मा था, उनके विकास के साथ साथ मेरा धीरे धीरे नेचर की महिमा और उस पर अपने अस्तित्व के निर्भर करने की सत्यता को अधिक से अधिक देखना और उसके परिवर्तन चक्र में यहां के और नाना सामान और सम्बन्धी तो कहीं रहे, अपने हि स्थूल शरीर के सम्बन्ध को भी क्षण भंगुर उपलब्ध करना अवश्यम्भावी था। इसीलिए किसी प्रकार का कोई मिथ्या अभिमान अथवा आत्म-विनाशक महा नीच घमंड भाव मुझ में उत्पन्न नहीं हो सका, और नहीं हुआ।

16 वर्ष की उमर तक यह अपने हित और दूसरों के हित के भाव जो पूजनीय भगवान में प्रस्फुटत हो गए थे, वही शक्तियां विकास पाने लगी। रुड़की कालिज में पढ़ने और फिर वहां नौकरी करने के दिनों में उनकी कर्तव्य निष्ठता के, उनके अनुशासन के और उनकी sincerity के अंग्रेज प्रिंसीपल भी कायल थे। इन दिनों में उन्हें उनके गुरू मिले, जिनकी संगत से उनके भीतर जो सत्य प्रेम की शक्ति ने विकास पाया, जिसने विकसित होते होते सत्य अनुराग का रूप धारण कर लिया। रूड़की में रहते उन्होंने अपने गुरू की अनथक सेवा की, जब उनकी रूड़की से बदली हो गई तो उन दिनों में पूरी तनख्वाह छोड़कर वह आधी तनख्वाह पर रूड़की वापिस आ गए ताकि अपने गुरू के निकट रहकर एक ओर अपना हित कर सकें और दूसरी ओर गुरू की सेवा का सौभाग्य पा सकें। उन दिनों की और घटनाओं को छोड़कर दो घटनाएं उनके हित अनुराग की सुन्दर उदाहरणे हैं: -

1) **एक व्यभिचारी जन के उद्धार के सम्बन्ध में** एक व्यक्तिचारी जन के उद्धार के सम्बन्ध में भगवान फरमाते हैं: - अभी मेरी उमर प्राय: 22 साल की थी। मै। रेल के काम में ओवरसियर था, उन दिनों एक "ब्राह्मण" सब ओवरसियर मेरे नीचे काम करता था। उसका स्वभाव दुष्ट था। उसका चाल चलन अच्छा न था। वह विवाहित था, परन्तु अपनी पत्नी को अपने पास नहीं रखता था। उस की पत्नी वहां से सैंकड़ों मील की दूरी पर अपनी सुसराल में रहती थी, और उस ने वहां पर एक बदचलन स्त्री अपने घर में बसाई हुई थी। इन हालात के मालूम होने पर, मुझ पर क्या उस की पत्नी की असहाय और दुखिया अवस्था और क्या उस की इस महा पापमूलक घृणित क्रिया ने बहुत कष्ट कर प्रभाव डाले। मेरे हृदय में उसके उद्धार के लिए ज़ोरदार प्रेरणाएं उठने लगीं। मैंने उसे पहले इस बात के लिए तैयार किया, कि वह मुझ से अंग्रेजी पढ़ा करे। फिर जब वह मुझ से अंग्रेजी पढ़ने लगा, तब मैंने उसे अलखधारी की तर्जुमा की हुई उर्दू गीता पढ़ने के लिए दी। उसके पाठ से उसके भीतर मेरे लिए सन्मान् का भाव कुछ और अधिक बढ़ गया। फिर उसका उपरोक्त हाल जानने पर मैंने उसके हृदय में उसकी पत्नी के संबंध में विश्वासघातकता और व्यभिचार विषयक पाप के संबंध में घृणा उत्पन्न करने के लिए संग्राम आरम्भ किया, जिस में मुझे सफलता हुई। मेरे उपदेशों से उसका हृदय बदल गया, और वह इस डाली हुई कुलटा स्त्री के छोड़ने और अपनी विवाहित पत्नी को अपने पास बसाने के लिए तैयार हो गया। एक अच्छी तरकीब निकल आई, कि जिसके पूरा होने पर वह बदकार औरत उसके घर से निकल गई, और उसकी विवाहित स्त्री उसके पास पहुंच गई और फिर प्रसन्नता पूर्वक उसके पास रहने लगी।

2) **दया वा सहानुभूति प्रकाश एक विशेष घटना।** मुझ में दया विषयक जो भाव बाल्यकाल से ही विकसित हुआ था, वह मेरे रुड़की के निवास के दिनों में और भी अधिक उन्नत हुआ, और मैं यथावसर उससे परिचालित होकर एक वा दूसरे प्रकार का दया - मूलक काम किया करता था। ऐसी कितनी हि छोटी छोटी क्रियाओं को छोड़कर जो मुझे इस समय, इसी भाव की सूचक वहां पर जो एक विशेष घटना उत्पन्न हुई थी, उसका मैं यहां उल्लेख करता हूं: -

सन् 1873 ई० में मैं गर्मी के मौसम में एक दिन शाम को वहां के बाज़ार में से जा रहा था। मैंने देखा कि वहां पर एक जगह एक जवान गौ नीलाम हो रही है। मुझ से किसी ने कहा, कि एक कसाई गौ को खरीदना चाहता है, यदि आप अपनी बोली देकर उसे छुडालें, तो उस की जान बस सकती है। इस बात को सुनकर मैंने उस के प्राण बचाने के लिए उस पर अपनी बोली देनी शुरू की और आखिरकार मैंने वह गाय खरीद ली। कई महीनों तक वह गाय मेरे पास रही, फिर कालेज की छुट्टियों में जब मैं घर जाने लगा, तब मैंने वह गाय एक ऐसे पंडित को दे देनी चाही, कि जिससे मैंने कुछ दिनों तक संस्कृत पढ़ी थी। उस पंडित ने अपना एक शिष्य मेरे पास भेज दिया और मैंने बड़ी प्रसन्नता के साथ वह गाय उनकी इच्छा के अनुसार उन के इस शिष्य को अर्पण कर दी। इसे अर्पण करने से पहले मैंने अपने पिता जी की सेवा में जो पत्र भेजा था, उस में मैंने इस गाय के संबंध में इस प्रकार लिखा था: -

"मैं यह गौ उन्हें इसलिए नहीं दूंगा, कि मुझे अगले जन्म में वह गौ फिर प्राप्त हो, किन्तु केवल निष्काम भाव से उन्हें अर्पण करूंगा।"

परम पूजनीय भगवान का अनोखा हित अनुरागी रूप

भगवान देवात्मा फरमाते हैं कि प्रत्येक मनुष्य का अस्तित्व जिन दो प्रकाश की वस्तुओं अर्थात:-

(1) नाना जीवित शक्तियों से गठ्न- प्राप्त एक शक्तिमय आत्मा, और (2) उसी आत्मा के द्वारा निर्मित एक जीवित जड़ अथवा भौतिक शरीर से संगठित है, उन में से आत्मा के सम्बन्ध में विविध प्रकार का सत्य ज्ञान लाभ करने के लिए जिन हित और सत्य विषयक सर्व्वांग और पूर्ण अनुराग शक्तियों से विकसित देव ज्योति की आवश्यकता है, उसे रहित होने के कारण, जैसे उस के प्रकृत रूप और उस के बनने और बिगड़ने के नियमों से पहले मनुष्य मात्र पूर्णत: अज्ञानी रहे, वैसे हि इन देवशक्तियों से सम्पन्न देवात्मा के प्रगट होने पर भी उस की देव ज्योति के बिना, अब तक करोड़ों जन अज्ञानी हैं। और इस आत्मिक अन्धकार के कारण वह नाना प्रकार के कल्पना-मूलक मिथ्या विश्वासों में लिप्त हैं। और यद्यपि यह सच है, कि मनुष्य जगत् के विकास में नाना जनों के हृदयों में एक वा दूसरे प्रकार के ऐसे सात्विक भाव प्रगट हुए हैं, कि जिन के द्वारा (उनके अपने विविध सम्बन्धों में नीच गति परायण रहने पर भी) कई प्रकार के बहु-मूल्य और बहुत प्रशंसनीय हित की उत्पति हुई है, और उन में से एक वा दूसरे भाव के द्वारा एक वा दूसरे प्रकार की बुराई भी घटी वा दूर हुई हैं, तथापि देवात्मा के भिन्न किसी जन में कभी हित और सत्य विषयक सर्व्वांग और पूर्ण देव अनुरागों का विकास नहीं हुआ।

पशु जगत् की न्याई मनुष्य जगत् के करोड़ों लोगों में कई प्रकार के सुख और दुख विषयक बोधों के विकसित होजाने से, उनमें सुख के प्रति स्वभावता आकर्षण वा अनुराग और दुख के प्रति विकर्षण वा विराग उत्पन्न हो गया है, इसीलिए वह नाना प्रकार के सुखों और कई प्रकार की तृप्तियों के वशीभूत होकर उनकी प्राप्ति के लिए विविध प्रकार का यत्न वा विविध प्रकार की क्रियाएं करते हैं-चाहे उनकी ऐसी क्रियाओं से किसी और को कैसा ही अनुचित दुख भी मिलता वा हानि पहुंचती हो। इसी लिए एक ओर अपनी एक वा दूसरे प्रकार की सुख वा तृप्ति चाहने वाली नीच शक्तियों के वशीभूत वा दास हो कर और दूसरी ओर हित अनुराग से शून्य होकर, वह अपने विश्वगत नाना जगतों के सम्बन्ध में विविध प्रकार से अनुचित क्रियाएं करने के लिए अपने आप को मजबूर पाते हैं। यही कारण है कि जिससे इस पृथिवी में भौतिक और उद्भिद जगतों की कई प्रकार की हानियों के भिन्न मनुष्य क्या मनुष्य और क्या पशु जगत् के जीवों के संबंध में विशेष रूप से पाप और अपराध मूलक नाना प्रकार के दुराचारों में प्रवृत्त पाया जाता है, और अपनी इन क्रियाओं से क्या अपने और क्या उनके लिए विविध प्रकार से हानिकारक होने के भिन्न दुख वा कष्ट दायक बना हुआ है और वह अपने सुख वा तृप्तिकर नाना भावों के दासत्व में फंसकर अपने आत्मिक जीवन की भी महा हानि कर रहा है।

यदि इस पृथिवी के किसी देश के सब प्रकार के मनुष्यों को इकट्ठा करके उन की गवर्नमेंट की ओर से यह घोषणा की जाए, कि कई प्रकार के अन्य पाप कर्मों का छोड़कर, वह गवर्नमेंट जिन कर्मों को अपराध समझती है, उन्हीं सब कर्मों से तुम सब इसी समय से

विरत हो जाओ, जिससे और जगतों को छोड़कर कम से कम मनुष्य जगत में ही तुम्हारे अपराधमूलक नीच कर्मों से जितने प्रकार का अनुचित दुख और कष्ट उत्पन्न हो रहा है, और जितने प्रकार की अन्य हानि हो रही है, वह सब मिट जावे, और तुम्हारे इन अपराधों के कारण गवर्नमेंट को जितनी फ़ौज और पुलीस और कचहरियां रखनी पड़ती है, उनका खर्च न रहे, और वह रुपया तुम्हारी और कई प्रकार की श्रेष्ट भलाईयों के काम में लगाया जाए, तो उनके सन्मुख ऐसी घोषणा वा उनसे इस प्रकार की अपील करना पूर्णत: निष्फल जाएगा। क्यों निष्फल जाएगा? इसलिए कि उनके हित अनुराग विहीन हृदयों तक किसी की ऐसी अपील पहुंच नहीं सकती, और उनके हृदय किसी ऐसी अपील को उसी प्रकार अनुभव नहीं कर सकते, जिस प्रकार तुम लाखों बिल्लियों वा भेड़ियों वा शेरों को एकत्र करके और उन से जीव वध से विरत हो जाने की अपील करके, उन्हें जीव हत्या वा मांसाहार से विरत नहीं कर सकते, अथवा किसी भेड़ वा बकरी को वर्षों तक अपने पास बिठाकर और उसके सामने रेखा गणित की सारी शकलें खैंचकर और बार बार उनकी व्याख्या करके, उन्हें रेखा गणितज्ञ नहीं बना सकते। हां, हित के विपरीत करोड़ों मनुष्यों में सुख के लिए इतना प्रबल आकर्षण वर्तमान है, कि यदि कोई जन किसी ऐसे लड़के वा युवक को कि जिस के हृदय में स्वभावजात किसी नशेदार वस्तु के लिए बहुत गहरी घृणा न आई हो, शराब, अफीम, तम्बाकू, गांजा, भंग, कोकेन आदि मे से किसी चीज़ के विषय में जिस का वह खुद भी सेवन करता हो, यह कहे, कि उसके सेवन से बहुत सुख वा लुफ्त मिलता है, तो वह इसी समय वा कुछ दिनों में उसकी इस अपील को अपने लिए हृदय ग्राही पाकर ग्रहण कर लेगा, और उन में से एक वा दूसरी मादक वस्तु का सेवन आरम्भ कर देगा: इसीलिए लाखों मनुष्य इसी प्रकार की नीच अपील करने वाली कुसंगत के द्वारा एक वा दूसरे प्रकार के नशे के अभ्यासी बन जाते हैं। इसी प्रकार जिन जनों में रुपए का प्रबल लालच वर्तमान हो, वह उस लालच के वशीभूत होकर, एक वा दूसरे प्रकार के बददयानत आदमी की शिक्षा से ठग, रिशवतख़ोर, चोर और डाकू आदि बन जाते हैं। यदि किसी जन में काम वासना विषयक सुख का बहुत प्रबल भाव वर्तमान हो, और व्यभिचार विषयक पाप से रोकने वाली उस में कोई शक्ति वर्तमान न हो, तो वह उस सुख की प्राप्ति के लिए व्यभिचारी बन जाएगा: इसीलिए इस प्रथिवी में लाखों नर और नारी व्यभिचारी बने हुए हैं, और धन के लालच के वशीभूत होकर कितने हि बड़े बड़े शहरों में सैंकड़ों और हज़ारों की संख्या में स्त्रियां बाज़ारों में खुल्लमखुल्ला बैठकर इसी महा पाप के द्वारा धन उपार्जन करती है, इत्यादि इत्यादि।

अब प्रश्न यह है, कि इन सब लाखों और करोड़ों जनों में यह सब नीच गतियां क्यों पाई जाती हैं? इसी लिए कि एक ओर उन में इन नीच गतियों की ओर लेजाने वाले प्रबल भाव वर्तमान हैं, और दूसरी और उनके द्वारा उनका अपना वा किसी और का जो जो अहित होता है, उस अहित के प्रकृत रूप में अनुभव करने के लिए उनके हृदय में कोई प्रकृत बोध अर्थात् उनके प्रति यथेष्ट घृणा वा विराग भाव वर्तमान नहीं। और केवल यही नहीं, कि करोड़ों जन अपने सूक्ष्म आत्मा और उसके जीवन के बिगड़ने अथवा विनाश और उस की रक्षा और उन्नति के सम्बन्ध में कोई बोध नहीं रखते, किन्तु अपने स्थूल शरीर के सम्बन्ध में भी नाना हितकर बोधों से पूर्णत: शून्य पाए जाते हैं। इसीलिए वह सुस्वादु वस्तुओं और

मादक द्रव्यों और जन्नेंद्रियों विषयक आदि कई प्रकार के सुखों के दास बनकर अपने शरीर के सम्बन्ध में भी नाना प्रकार की असंयम-मूलक हानिकारक क्रियाओं के करने के लिए मजबूर होते हैं, और मजबूर होकर अपने स्थूल शरीर की भी आवश्यक रक्षा नहीं कर सकते, और उस की भी विविध प्रकार से हानि करने से रुक नहीं सकते।

अब जब कि मनुष्य जगत् में यह महा शोचनीय अवस्था हज़ारों और शायद लाखों वर्षों से जारी थी, और देवात्मा के प्रगट होने से पहले, मनुष्य जगत् के करोड़ों जन एक ओर हित विषयक सर्व्वांग अनुराग भावों से विहीन थे, और क्या इस लोक और क्या परलोक में केवल सुख की प्राप्ति के पूर्ण लालसी बने हुए थे, और उसी का लाभ करना अपने अस्तित्व का लक्ष्य समझते थे, और वह विविध प्रकार के नीच भावों के वशीभूत होकर विश्व के नाना विभागों के नाना अस्तित्वों के सम्बन्ध में विविध प्रकार की आन्तरिक हानिकारक चिन्ताएं और बाह्यक हानिकारक अन्य क्रियाएं करने के लिए मजबूर थे, और दूसरी ओर हित और सत्य अनुराग और उसे उससे विकसित देव ज्योति से विहीन होने के कारण अपने आत्मा के प्रकृत रूप और उसके जीवन के विनाश वा विकासकारी नियमों, उपास्य, उपासना, उपासक, पाप, पुण्य और उनके फलों, मनुष्य के लक्ष्य और आदर्श, मोक्ष और धर्म्म विषयक सत्य ज्ञान के विचार से अन्धकार में पड़े हुए थे, और इन और अन्य नाना विषयों में नाना प्रकार के मिथ्या विश्वासों में लिप्त होकर अपनी और अपने साथ औरों की महा भयानक हानि कर रहे थे, देवात्मा का भारत वर्ष में उपरोक्त परम वांछनीय देव अनुरागों को बीज रूप में पाकर प्रकट होना और उस के हृदय में बाल्य काल से उन में से पहले पहल हित विषयक सर्व्वांग अनुराग का धीरे धीरे विकास पाना और फिर उस के यथेष्ट विकास के अनन्तर उसकी हृदय भूमि के सत्य विषयक सर्व्वांग अनुराग के विकास के लिए अनुकूल बन जाने पर, उसका उसमें धीरे धीरे विकसित होना और उस में उन दोनों प्रकार की देव शक्तियों से सम्पन्न देव जीवन और इस देव जीवन से देव तेज ओर देव ज्योति का विकास पाना नेचर के विकास क्रम मे निश्चय एक ऐसी घटना है, कि जो एक ओर जैसे अति अद्भुत और महा आश्चर्यजनक है, वैसे ही दूसरी ओर इस देवात्मा का ऐसा आविर्भाव न केवल मनुष्य जगत्, किन्तु विश्व के अन्य सब जगतों के लिए जिस प्रकार से परम आवश्यक था और इसीलिए वह परम कल्याणकारी प्रमाणित हुआ और हो रहा है, और होता रहेगा, उसके विचार से भी उसके अध्ययन करने और उसके विषय में सत्य ज्ञान लाभ करने और उसे सारे मनुष्य में प्रचार करने की बहुत बड़ी आवश्यकता है।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,

हित अनुराग के विकास का अगला कदम

रूड़की जब पूजनीय भगवान को अपने पूज्य गुरू के बिना सूनी लगने लगी तो उन्होंने अपने प्रिंसीपल साहिब से मशवरा लिया कि उनके विकास के लिए और कौन सा स्थान उपयुक्त हैं, उन्होंने लहौर में जाने का मशवरा दिया। वह मशवरा पंजाब के लिए जो बरकतें लाया है, वह हम सब अपने जीवनों में देखते हैं।

लहौर में आकर धीरे धीरे उनका देव जीवन इस कदर विकसित हो गया और हित अनुराग ने झंझोड़ना शुरू किया कि उनका लक्ष्य कुछ और है। बेशक नौकरी के कुछ घण्टों को छोड़कर वह अपना सारा समय अपने और दूसरों के हित के लिए लगाते थे, परन्तु बेचैन रहते थे कि किस प्रकार मैं नौकरी छोड़कर सारा समय मानवता के हित के लिए अर्पण कर सकूं। उस समय वह कुछ देर ब्रह्मों समाज में रहे, वहां उनके लैक्चर होते तो लोग हिल जाते थे और बहुगिणती में उन्हें सुनने के लिए लिलायत रहते थे। परन्तु ब्रह्मवादियों के कई जनों के आचरण से वह सन्तुष्ट नहीं थे।

आखिर मानवता के हित के लिए उस समय 1875 - 80 में 150 रुपये की नौकरी छोड़ दी और जीवन ब्रत ग्रहण कर लिया "सत्य, शिव, सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे जग के उपकार में ही जीवन यह जावे" जिस मानवता के हित के लिए उन्होंने अपना सब कुछ त्याग किया, उनके द्वारा विरोधता के तुफान उठ खड़े हुए। वह बहुत लम्बी कथा है।

पूजनीय भगवान ने फरमाया है, "अब यदि एक ओर नीच लक्ष्यधारी और नाना सम्बन्धों में पापी, दुराचारी और अशिष्टाचारी आत्माओं को इस पृथिवी में उनके नीच लक्ष्य और उनकी नीच गतियों से **मोक्ष देना** और ऐसी हानिकारक गतियों से उनकी **रक्षा करना** और दूसरी ओर उनकी नाना हीनताओं का **बोध** और **उच्च भाव** उत्पन्न करके उनके जीवन का **विकास करना** मेरे आर्विभाव अथवा जीवन ब्रत का परम लक्ष्य न होता, और संसार के बहुत से सम्प्रदायों के संस्थापकों की न्यांई अपने सेवकों को कुछ पूजा पाठ और भजन आदि सिखा देना और कुछ मत विषयक शिक्षा देना ही उद्देश्य होता, तो मुझे अपने श्रद्धावहीन और अल्प श्रद्धावान, परन्तु अंह भाव के अधीन नाना सामाजिक जनों से उनकी नीच प्रकृति के कारण जो जो महा घोर और कई अवस्थाओं में महा सांघातिक आघात और तीर लगे, और महा भयानक और हृदय विदारक दुख और कलेश पहुँचे, वह न लगते और न पहुंचते।

"इसीलिए अपने जीवन ब्रत के ग्रहण करने के निमित्त जिस दिन मैंने नौकरी से इस्तीफा दिया, उसी दिन से मेरे प्रति विशेष रूप से विरोधता का प्रकाश आरम्भ हुआ। नौकरी छोड़ने से पहले कितने ही जन, जो मुझे बहुत ज्ञानवान, और धार्मिक जानकर बहुत सम्मान की दृष्टि से देखते थे, वह मुझे पागल और मार्ग के भिख़ारी के रूप में देखकर मुझसे कट गए और मुझे घृणा करने लगे।"

जिस प्रकार परम पूजनीय भगवान पर मिथ्या अभियोग लगाए गए, स्वास्थ्य के विचार से कितनी बार मृत्यु के निकट पहुँचते रहे। जिनका वर्षों भला किया, परन्तु नीच भावों के अधीन होकर उन्होंने किस प्रकार उन्हें सताया, तड़पाया, कचहरियों में घसीटा, वह सारी कथा दिल को दहला देने वाली है। परन्तु हित अनुरागी होकर उनके लिए एक कदम पीछे हटाना भी असम्भव था। मानवता को विज्ञान मूलक धर्म देने के लिए जो उन्होंने संघर्ष किया वह भी हित अनुराग से परिचालित था। उनका देव जीवन अद्वितीय, उनका कारज अद्वितीय और उसके लिए उनके त्याग अद्वितीय।

मेरे अद्वितीय त्याग क्यों?

परम पूजनीय भगवान फरमाते हैं, मेरा नाना प्रकार का अद्वितीय त्याग क्यों?

देव जीवन को प्राप्त होकर मैं विश्व के प्रत्येक विभाग के साथ अपना जीवन्त सम्बन्ध अनुभव करता हूं। मैं विश्व के नाना प्रकार के जीवित और अजीवित अस्तित्वों के साथ अपने आपको विविध उच्च भावों के द्वारा बन्धा हुआ पाता हूं। यदि मैं देखता हूं, कि किसी जीवित अस्तित्व वा अजीवित पदार्थ को कोई अनुचित हानि पहुंच रही है, तो मैं उस अस्तित्व वा पदार्थ के साथ जुड़ा हुआ अनुभव करने के कारण उसकी इस हानि से अपने हृदय में आघात् लाभ करता हूं। यदि मेरी पत्नी, वा मेरा कोई बच्चा, वा अन्य पारिवारिक जन, वा मेरा कोई सेवक वा श्रद्धालु, वा कोई और जन किसी अन्य जन वा पशु वा पौदे वा किसी निर्जीव पदार्थ के सम्बन्ध में कोई अनुचित क्रिया करे, तो उसके देखने वा पता लगने पर मुझ तक उसकी क्रिया का आघात् पहुंचता है, और मैं उससे क्लेश पाता हूं। यदि कोई अन्य जन वा जीव मेरे उपरोक्त नाना प्रकार के सम्बन्धियों के सम्बन्ध में कोई अनुचित क्रिया करे, तो उसका भी मेरे हृदय पर आघात् लगता है। यदि मैं अपने वा किसी और के घर की दीवारों खिड़कियों, छतों, मोरियों, उसके फ़र्श, दरवाज़ों, परनालों और शीशों आदि को मैला, टूटा, बदसूरत, मकड़ी के जालों से भरा हुआ वा किसी रास्ते में गढ़े वा उसे धूलि से पूर्ण और गोबर वा लीद वा घास फूस आदि से मैला देखता हूं, तो मुझपर उसका क्लेशदायक असर पड़ता है। यदि मैं अपने वा किसी और के कपड़ों, बरतनों, लैम्पों, पुस्तकों, तस्वीरों, सन्दूकों, जूतों वा अपनी वा किसी और की किसी मेज़ चौकी आदि किसी अजीवित वस्तु को मैले और कदाकार रूप में देखता हूं, तो उससे मुझे क्लेश होता है। यदि मैं अपनी वा किसी की वस्तुओं को बे ठिकाने और विशृंखला की हालत में देखता हूं, तो उससे भी मुझे कष्ट होता है।

यदि मैं देखता हूं, कि किसी जीवित पौदे को (जिसे पानी मिलना चाहिए था) पानी नहीं मिला, और उस से वह सूख रहा है, तो मुझे उसकी इस हानि को देख कर तकलीफ़ होती है। यदि मैं देखता हूं, कि मेरा एक पारिवारिक जन दूसरे पारिवारिक जन के प्रति अथवा कोई सेवक किसी अन्य सेवक के प्रति उचित सन्मान् प्रदर्शन नहीं करता, वा उसके किसी दुख दर्द की ओर ध्यान नहीं देता, अथवा उसके प्रति कोई और उचित वा न्याय-मूलक व्यवहार नहीं करता, तो उसका आघात् मुझ तक पहुंचता है, और मैं दुखी होता हूं। यदि मैं देखता हूं, कि मेरे अथवा मेरे किसी पारिवारिक वा सामाजिक जन के सम्बन्ध में कोई अपनी उचित प्रतिज्ञा भंग करता है, तो मुझे उससे कष्ट पहुंचता है। यदि मैं देखता हूं, कि मेरे वा किसी अन्य के सम्बन्ध में कोई जन कृतघ्न बनता है, तो उस से मुझे बहुत दुःख होता है। यदि मैं देखता हूं, कि कोई जन किसी अन्य जन वा पशु को कोई अनुचित दुःख वा किसी पौदे वा वृक्ष को अनुचित हानि पहुंचाता है, तो उससे मेरे दिल में सख़्त चोट लगती है। यदि मैं देखता हूं, कि कोई जन मेरे वा किसी अन्य के सम्बन्ध में अपना कोई आवश्यक कर्तव्य कर्म्म ठीक समय में और भलीभांत पूरा नहीं करता, तो मुझे उस से बहुत क्लेश मिलता है। यदि मैं देखता हूं, कि कोई जन मेरे वा किसी अन्य जन के प्रति कोई अत्याचार करता है, तो

मुझे उससे बहुत दुःख होता है। यदि मैं देखता हूं, कि मेरा कोई सम्बन्धी योग्यता रखने पर भी एक वा दूसरे कारण से अपने जीवन को उन्नत नहीं करता वा नहीं करना चाहता, तब मुझे उस से क्लेश पहुंचता है। यदि मैं देखता हूं, कि कोई जन अपने आत्मिक जीवन वा किसी और के विषय में किसी प्रकार का मिथ्या विश्वास रखता है, वा किसी मिथ्या मत वा विश्वास का प्रचार करता है, वा मिथ्या का साथी बन कर किसी सम्बन्ध में कपटाचारी वा हानिकारक बनता है, तो उस से मुझे बहुत आघात् पहुँचता है। यदि मैं देखता हूं, कि किसी के सम्बन्ध में कोई द्वेष भाव रखकर उसे कोई अनुचित हानि पहुंचाने की चेष्टा करता है, तो उससे मैं व्यथित होता हूं। यदि मैं देखता हूं, कि कोई अपने धन का अपव्यय वा किसी वस्तु से अनुचित व्यवहार करता है, तो उससे मुझे तकलीफ पहुंचती है यदि मैं देखता हूं, कि असंयम द्वारा कोई जन अपने शारीरिक स्वास्थ्य को हानि पहुंचा रहा है, तो मुझे उसकी ऐसी क्रिया क्लेश दायक मालूम होती है इत्यादि इत्यादि।

इस प्रकार के नाना आघात् मुझे अपने किसी आश्रित वा अधीन अस्तित्व की रक्षा और सहाय करने और हानिकारक जन पर उसकी बुरी क्रिया के प्रगट करने वा यथा सम्भव उस तक अपनी देव ज्योति के पहुंचाने और उसमें किसी आवश्यक उच्च बोध के उत्पन्न करने के लिए सदा प्रेरणा करते हैं। जिन आत्माओं में इस प्रकार के नाना उच्च बोध वर्तमान नहीं हैं, उन्हें उपरोक्त प्रकार के न कोई आघात् पहुंचते हैं, और न वह ऐसे किसी आघात् से परिचालित होकर इन विषयों में किसी की कोई रक्षा वा सहाय करते हैं, और न किसी का ऐसी अवस्था से उद्धार करने के लिए कोई यत्न करते हैं, और न ऐसा संग्राम करके विश्व में कोई उच्च परिवर्तन उत्पन्न करते हैं।

इस प्रकार से विश्व के विविध विभागों में नाना प्रकार के हित लाने के निमित्त, मैं अधिकारी आत्माओं में उच्च वा सात्विक भावों के जाग्रत वा उन्नत करने के लिए जो जो कुछ संग्राम करता हूं, उसका भी उन बोधों से विहीन करोड़ों जनों में कोई निशान नहीं मिलता। इस लिए विश्व में इस प्रकार के सर्वोच्च परिवर्तन के लाने में जैसे मेरे आविर्भाव की विशेषता है, वैसे हि मेरे लिए अपने इस विशेष आविर्भाव के विशेष लक्ष्य वा ब्रत के पूरा करने के निमित्त अपने विविध सम्बन्धियों से उन की नाना प्रकार की नीच गतियों के कारण नाना प्रकार के आघात् और ऐसे बड़े बड़े आघातों से घोर से घोर क्लेश और बड़े बड़े दारुण दुःख पाना और सहना और नाना प्रकार के त्याग स्वीकार करना और उनके उद्धार और भले के लिए अपने शारीरिक, मान्सिक और हार्दिक बल को ख़र्च करना और सब प्रकार का आत्म-समर्पण करना भी लाज़मी रहा है।

प्यास के लगने से मनुष्य पानी पीता है, और पानी का पीना उसके शरीर के रक्त को पतला और प्रवाहित रखने के लिए निहायत ज़रूरी है। अब यदि राम को बहुत प्यास लगी हो, परन्तु उसे पानी न मिले, अथवा समय पर उसके मिलने की सम्भावना न हो, तो राम के लिए यह प्यास क्लेशदायक होजायगी। और यह प्यास उसमें जितनी अधिक प्रबल होगी, उतनी हि उस के लिए अधिक क्लेशदायक बनकर उसे व्याकुल और बेचैन करेगी। फलतः जिस मनुष्य में जो भाव जिस जिस प्रकार की तृप्ति ढूंढता हो, वह यदि उसे लाभ न हो, तो वह उसके लिए अवश्य बेचैन और व्याकुल होता है।

मुझ में विश्व के प्रत्येक जगत् के सम्बन्ध में वह सब देव भाव विकसित हुए हैं, कि जो उनमें उच्चगति मूलक एकता चाहते हैं। इसीलिए जिस किसी सम्बन्ध में जिस किसी कारण से कोई बुराई उत्पन्न होती है, अथा कोई सम्भव और वांछनीय भलाई नहीं आती, उससे मुझे आघात् पहुंचता है, और यदि यह आघात् बहुत प्रबल हो, तो मैं उससे बेचैन होकर तड़पने लगता हूं। परन्तु जिन में ऐसे बोध विकसित नहीं हुए, वह ऐसी किसी घटना से दुखी वा बेचैन नहीं होते। उनमें जिस जिस सम्बन्ध में पाप वा बुराई का बोध नहीं है, उसके लिए उन्हें कोई आघात् नहीं लगता, और कोई क्लेश वा दुःख नहीं पहुंचता। इसीलिए कितने हि लोग क्या मेरे सम्बन्ध में और क्या विश्व के अन्य अस्तित्वों के सम्बन्ध में नाना प्रकार के पाप और नाना प्रकार की बुराइयां वा नीच गतियां ग्रहण करके केवल यही नहीं, कि कुछ दुखी नहीं होते, किन्तु बहुत शान्त और प्रसन्न रहते हैं। पत्थर को जैसे जोंक नहीं लगती, वैसे हि इन अबोधी जनों को किसी सम्बन्ध में अपने किसी अनुचित आचरण के लिए कोई दुःख वा क्लेश नहीं होता, और न कोई घृणा अनुभव होती है। इसीलिए उनके ऐसे नाना पापों और अपराधों का क्रम बराबर जारी रहता है, और कोई कल्पित ईश्वर वा देवता वा उनका कोई मंत्र दाता गुरू उन्हें उनसे मोक्ष नहीं दे सकता।

जैसे भूख और प्यास का लगना शरीर की रक्षा के लिए आवश्यक है, और जिस जन को भूख वा प्यास न लगती हो, और आहार वा पानी के समय पर न मिलने अथवा बिलकुल न मिलने से उसे कोई बेचैनी न मालूम होती हो, उसके शरीर का नाश होजाना अवश्यम्भावी है, वैसे ही एक ओर जिस आत्मा में अपने विश्वगत किसी सम्बन्धी के सम्बन्ध में अपनी किसी नीच गति के लिए कोई क्लेश न होता हो, और उसके सम्बन्ध में किसी अशुभ वा अहित को उत्पन्न करके उसे कोई चोट न लगती हो, और दूसरी ओर उसे जीवन तत्व विषयक कोई ज्ञान और उसमें उच्च जीवन की प्राप्ति के लिए कोई आकांक्षा न हो, उसका नेचर के इसी अटल नियम के अनुसार कुछ काल में विनाश होजाना अवश्यम्भावी है।

हित, अहित, सत्य और असत्य विषयक नाना देव बोधों को पाकर, और विश्व के प्रत्येक जगत् के साथ सत्य और शुभ मूलक मेल से अपने आत्मा के सर्व्वांग जीवन का विकासार्थी बनकर, मेरे लिए अपने इस दुनिया के अबोधी सम्बन्धियों से जैसे विविध प्रकार के आघात् और क्लेश पाना आवश्यक रहा है, वैसे हि नाना दारूण आघातों और दुखों के समय तड़पना और बेचैन होना भी लाजमी हुआ है। परन्तु इस महा तत्व से अबोधी जन, कितनी हि अवस्थाओं में मुझे अपनी किसी नीच गति के कारण कोई आघात् पहुंचाकर वा दुःख देकर वा किसी ऐसे आघात् वा दुःख से बेचैन वा तड़पता देख कर केवल यही नहीं, कि इस में मुझ देव बोधों के भण्डार की कोई महिमा नहीं देखते रहे, और अपने एक वा दूसरे अपराध वा पाप के लिए कोई शोक वा कलेश वा घृणा अनुभव नहीं करते रहे, वरन उलटा मेरे सम्बन्ध मं एक वा दूसरा दोषारोपण वा एक वा दूसरी दुश्चिन्ता करके अपने हृदय को और भी अधिक कुलषित, नीच, कठोर और विकार युक्त बना लेते रहे हैं।

हरबर्ट स्पेन्सर अपनी "एज्यूकेशन" नामी पुस्तक में एक जगह इस प्रकार लिखते है: -

"If by any system of culture an ideal

human being could be produced, is it not doubtful whether he would be fit for the world as it now is? May be not, on the contrary, suspect that his too keen sense of rectitude and too elevated standard of conduct, would make life intolerable or even impossible?"

मावार्थ

"यदि शिक्षा की किसी विधि के द्वारा एक आदर्श मनुष्य उत्पन्न किया जा सके, तो क्या यह सन्देह नहीं हो सकता, कि इस काल में दुनिया जैसी है, उसके साथ वह किसी प्रकार मेल की अवस्था में न रह सकेगा? इसके विरूद्ध क्या हम यह शंका नहीं कर सकते, कि उस में ठीकपन का जो अति गहरा भाव और चरित्र विषयक अति उच्च पैमाना वर्तमान होगा, उससे इस जगत् में उसका जीवन उसके लिए अत्यन्त दुखदाई अथवा असम्भव हो जाएगा?"

हरबर्ट स्पेन्सर विख्यात् विकास वादी थे। "शिक्षा" नामक पुस्तक में उन्हों ने मनुष्य के लिए उच्च शिक्षा विषयक विधि का वर्णन करते करते अचानक अपने भीतर यह प्रश्न उठता हुआ देखा, कि यदि कोई मनुष्य साधारण मनुष्यों की तुलना में इतनी उच्च शक्तियों की सामग्री लेकर पैदा हो, कि जिससे वह शिक्षा की उच्च विधि में से गुज़र कर एक आदर्श जीवनधारी मनुष्य बन जाए, तो क्या दुनिया के साधारण मनुष्यों की जैसी वर्तमान अवस्था है, उनमें रहकर वह उनके साथ किसी प्रकार मेल रख सकेगा? इस प्रश्न के उत्तर में उन्हों ने लिखा है, कि उन्हें सन्देह है, कि इस दुनिया में ऐसे आदर्श मनुष्य का जीवन उसके लिए अतिशय दुखदाई अथवा असम्भव हो जाएगा।

स्पेन्सर को उपरोक्त प्रश्न का उपरोक्त उत्तर देते समय क्या पता था, कि उन्हीं के समय में एक ऐसा आदर्श पुरुष नेचर ने प्रगट किया है, कि जिसके जीवन के सम्बन्ध में यह बात "सन्देह" के साथ नही किन्तु निश्चय रूप से कही जा सकती है। वह अपने इस आदर्श जीवन के कारण जिस प्रकार के महा भयानक दुखों और उत्पीड़नों में से गुज़रा है, वह अकथनीय हैं। उसे एक ओर जहां अपने अद्धितीय ब्रत के विचार से लोगों से जो जो सर्व्वोच्च सन्मान् और आकर्षण पाना चाहिए था, वह प्राप्त नही हुआ, वहां दूसरी ओर उसके विरुद्ध वह उनके निकट अतिशय घृणा और उत्पीड़न का पात्र समझा गया। इस स्वभाव-गत महा भेद के कारण लोग उसकी ओर आकृष्ट होने के स्थान में उससे परे भागने और परे रहने में आराम अनुभव करते रहे हैं। जैसे कबूतर और कव्वे दोनों ही पक्षी जाति में से होकर भी मिलकर नहीं रहते, किन्तु सर्वदा दूर दूर रहते हैं, वैसे हि नीच गति परायण जन आत्मा होकर इस सर्व्वोच्च जीवनधारी देवात्मा से मेल नहीं कर सकते, और उस से परे परे रहते हैं। इसीलिए उसे आज तक इस पृथिवी में एक भी ऐसा सम्बन्धी नहीं मिला, कि जिसके साथ वह सब प्रकार से मेल की अवस्था में रहा हो। परन्तु उसने विश्व के एक श्रेष्ट विभाग का सर्व्वोच्च आविर्भाव और अंग होकर उसके प्रत्येक विभाग में जो कुछ और जहां तक उच्च विकास हो सकता है, उसके लाने, और जहां तक उसकी अहित से रक्षा हो सकती है, उसकी रक्षा करने के लिए जो अद्वितीय व्रत ग्रहण किया था, उसकी सिद्धि के लिए उन सब अद्वितीय दुखों को सहा है, उन

सब महा त्यागों, तपों और संग्रामों को ग्रहण किया है, कि जिनके बिना वह अपने अद्वितीय ब्रत को कदापि पूरा नहीं कर सकता था।

जिस विश्व ने अपने उच्च विकास के क्रम में मुझे इस अद्वितीय देवयज्ञ के पूर्ण करने के निमित्त आविर्भूत किया, जिसने मेरे आत्मा की गठन को पूर्ण करके मुझे वह देव शक्तियां दी, कि जो इस देवयज्ञ के लिए आवश्यक थीं, उसकी यह विचित्र लीला क्या किसी को दिखाई देती है? क्या मेरे इस सर्व्वोच्च अविर्भाव में विकास विषयक नियम अपने जिस महान सौन्दर्य्य को प्रकाश कर रहा है, उसकी अतिशय मनोहर छवि किसी के चित्त को आकृष्ट करती है? क्या इस अद्वितीय यज्ञ के साधन में मेरा पूर्ण आत्म-समर्पण और मेरा घोर संग्राम और तप वा पूर्ण त्याग किसी की दृष्टि में कुछ मूल्यवान मालूम होता है? क्या मेरे अद्वितीय आविर्भाव और अद्वितीय व्रत के ग्रहण करने से जो जो अति श्रेष्ट और अनोखे फल उत्पन्न हुए हैं, अर्थात् सैंकड़ों नर और नारी जनों के आत्माओं में जो जो शुभ परिवर्तन और उनके परिवारों में जो जो हित आया है, उनके और उनकी सन्तान के लिए जिस जिस प्रकार की कल्याणकारी संस्थाएं खुली हैं, जिस जिस प्रकार की अति श्रेष्ट और अद्‌भुत पुस्तकें रची गई हैं, जो जो उच्च लेख लिखे गए हैं, सत्य धर्म विषयक जो जो नाना प्रकार के विचित्र सत्य प्रकाशित हुए हैं, आत्मिक जीवन के विकास वा विनाश के सम्बन्ध में जो जो महान तत्व प्रगट हुए हैं, धर्म विषयक जो जो अज्ञान और कुसंस्कार नष्ट हुआ है, कल्पनामूलक मिथ्या मतों और विज्ञानमूलक सत्य मत का जो जो भेद खुला है, जो जो पाप गया है, और जो जो सत्य और शुभ आया है-वह सब मेरे अद्वितीय त्याग की महिमा को डंके की चोट से स्थापन नहीं करता? अवश्य करता है। तब मेरे इस परम हितकर यज्ञ और अद्वितीय ब्रत की महिमा और उसके सौन्दर्य के देखने के योग्य होना और उसके कार्य में भागी बन्ने के पास सौभाग्य को अनुभव करना, और इस अद्वितीय यज्ञ के अग्निकुण्ड में अपने धन वा शारीरिक वा मन्सिक वा यथा सम्भव हार्दिक बल की आहुतियां देने के योग्य बनना किसी मनुष्य का कितना श्रेष्ट अधि कार! ऐसे श्रेष्ट अधिकार के लाभ करने के निमित्त जितने आत्माओं में अधिक से अधिक आकांक्षा जागेगी, और वह उसके लिए खुशी खुशी अपने आप को समर्पण करेंगे, उतना हि मेरे आविर्भाव का उद्देश्य सिद्ध होगा, और इस देश और पृथिवी का वह कल्याण साधन होगा, जो मेरे जीवन ब्रत ग्रहण करने से पहले कभी नहीं हुआ था।

मेरा अस्तित्व और मेरा जीवत ब्रत, मेरा त्याग और मेरा संग्राम, विश्व के जिस विकासकारी अटल नियम के द्वारा प्रगट हुआ है, वह जैसे उसकी गठन के प्रत्येक विभाग में (विशेषत: मनुष्य जाति में) उच्च परिवर्तन लाने के लिए ज़रूरी था, वैसे हि वह उसके अटल नियम के अनुसार (अन्धकारग्रस्त और नीचगतिपरायण हज़ारों आत्माओं के विरोधी बनने पर भी) अब तक जिस जिस विधि से फलीभूत हुआ है, वह सब उच्च बोध रखने वालों के लिए अति अश्चर्य्य और अलौकिक लीला है। आगे भी इसी अटल और महान नियम के द्वारा वह जो इससे भी बढ़चढ़ कर फलीभूत होगा, उस में कोई सन्देह नहीं हो सकता।

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

महोत्सव का कार्यक्रम

सोमवार 12 दिसम्बर 2016

प्रवेश सभा - 4.30 बजे सायं

मंगलवार 13 दिसम्बर 2016

1- पहली सभा - 9.30 बजे प्रात:

विषय -परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बन्ध

2- पब्लिक लैक्चर - 4.00 बजे सायं

3- संगीत सभा - 7.30 बजे सायं

बुधवार 14 दिसम्बर 2016
(महोत्सव का विशेष दिन)

सूर्य निकलने के समय जो कि आत्मिक जगत के सूर्य परम पूजनीय भगवान देवात्मा के शुभ जन्म का समय है, बैंड, बाजा, कीर्तन, शुभकामनाएं और जय ध्वनि - 6.30 बजे प्रात:

1- पहली सभा - 9.00 बजे प्रात:

विषय - भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बन्ध में हमारी ओर से कुर्बानियों की आवश्यकता। धन और जन की अपील।

2-दूसरी सभा - 2.00 बजे दोपहर - बच्चों की सभा और कुछ भजन।

3-पब्लिक लैक्चर - 4.00 बजे सायं

4-दीप माला - 6.00 बजे सायं

5-आलोचना सम्बन्धी सुझाव
(लिखकर भी दे सकते हैं)

वीरवार 15 दिसम्बर 2016

1- पहली सभा - 9.00 बजे प्रात:

सेवक, सेविकाओं का ग्रहण, श्रेणियों में उन्नति तथा पारिवारिक अनुष्ठान

2- भाव प्रकाश

3- देव आरती का गान और जय ध्वनि

नोट :-

1. कृपया सेवक-सेविका अपनी एकाकारियों के साथ शामिल हों ।
2. आवश्यकता पड़ने पर किसी कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है ।
3. यात्रीगण कृपया अपने बिस्तर अवश्य साथ लाएँ।
4. अपने आने की सूचना, संख्या समेत, पहले देने की कृपा करें।

फोन : 0172-2716914, 9915594601, 9463836617

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts